पाठ - 7
कलिमए तौहीद की शर्तें (2)

الدرس السابع - هندي
تابع شروط لا إله إلا الله

4. **अनुश्रण तथ आत्मसमर्पण करना** : इंसान ''लाइलाहा इल्लल्लाह को उसके व्यापक अर्थों में स्वीकार करे। और व्यापक अर्थों में स्वीकार करने के बीच यह अन्तर है कि केवल ज़ुबान से इक़रार करने को मानना कहते हैं जबकि उसे व्यवहार में लाना व्यापक अर्थों में स्वीकार करना कहलाता है।

यदि कोई व्यक्ति ''लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ एवं भाव समझ लेता है, उसपर विश्वास कर लेता है और उसे क़ुबूल भी कर लेता है लेकिन उसके लिए आत्मसमर्पण नहीं करता है उसे दिल से नहीं मानता और उसके तक़ाज़ों को पूरा नहीं करता तो समझ लो कि उसने व्यापक अर्थों में स्वीकार नहीं किया। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿وَأَنِيبُوا إِلَى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ﴾ [الزُّمر:٥٤] यानी तुम सब अपने पालनकर्ता के सामने झुक जाओ और उसके आदेश का पालन किये जाओ। (सूरह अलज़ुम्र, आयत 54) एक दूसरी जगह अल्लाह तआला फ़रमाता है :

यानी, क़सम है तेरे पालनहार की! वे मोमिन नहीं हो सकते, जब तक कि अपने तमाम विरोध भासों में आपको हाकिम न मान लें, और जो फ़ैसला आप उनमें कर दें उनसे अपने दिल में किसी तरह की तंगी और नाखुशी न पाएं और आज्ञापालनके साथ क़ुबूल कर लें। **(सूरह अलनिसा, आयत 65)**

5. **सच्चाई :** इंसान को अपने ईमान और अक़ीदे के मामले में सच्चा और ईमानदार होना चाहिए। अल्लाह तआला फ़रमाता है : ﴿يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ﴾

यानी, ऐ ईमान लाने वालो! अल्लाह तआला से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। (सूरह अलतौबा, आयत 119) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जिसने सच्चे दिल से इस बात की गवाही दी कि अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक माबूद नहीं, वह जन्नत में दाख़िल होगा। इसे इमाम अहमद ने रिवायत किया है और शैख अलबानी ने इसे सही क़रार दिया है।

यदि इंसान ने ज़ुबानी तौर पर गवाही दी, लेकिन उसके तक़ाज़ों से इन्कार कर दिया तो यह चीज़ उसे छुटकारा नहीं दिला सकेगी बल्कि उसकी वजह से वह मुनाफ़िक़ों में गिना जाएगा । सच्चाई से इन्कार यह भी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई चीज़ों को झुठलाया जाए। या उनकी लाई हुई कुछ चीज़ों को झुठलाया जाए। अल्लाह तआला ने हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुशरण और आज्ञापालनका आदेश दिया है और उसे अपना आज्ञापालन कहा है। अल्लाह फ़रमाता है: ﴿قُلْ أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ﴾ [النور:٥٤]

यानी, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप कह दीजिए कि अल्लाह का आदेश मानों और रसूल का आज्ञापालन करो। (सूरह अलनूर, आयत 54)